# अंपुनरागमन पथः मोक्षपथ

आ.रत्न कनकनंदीजी

Scanned by CamScanner

# अपुनरागमन पथ : मोक्षपथ

लेखकः

आ.रत्नकनकनन्दी जी महाराज

अर्थ सौजन्यः

कोठारी परिवार

श्री देवीलाल जैन – श्रीमती धनकुंवरदेवी जैन

डॉ. राजमल जैन– श्रीमती रत्नमाला जैन

संपादकः

कु. लक्षदीपिका जैन

प्रकाशकः

धर्म-दर्शन-विज्ञान शोध संस्थान



Scanned by CamScanner

पुस्तक :— अपुनरागमन पथ— मोक्षपथ
लेखक :— आ.रत्न श्री कनकनन्दी जी गुरूदेव
अध्यक्ष :— श्री गुणपाल जैन (मुजफ्फरनगर)
कार्याध्यक्ष :— श्री भंवरलाल पटवारी
वरिष्ठोपाध्यक्ष :— श्री सुशीलचंद जैन (वड़ौत)
उपाध्यक्ष :— संपादन — प्रकाशन
1. श्री प्रभातकुमार जैन, (मु.नगर)
2. श्री राजमल पाटौदी (कोटा)
3. श्री रघुवीरसिंह (मुजफ्फरनगर)
मानद् निर्देशक :— डॉ. राजमल जैन (उदयपुर)
मंत्री :— श्री नेमीचन्द काला (जयपुर)
संयुक्त मंत्री :— श्री पंकज कुमार जैन(वड़ौत)
प्रचार मंत्री :— श्री अशोक कुमार गोधा (उदयपुर)
परम संरक्षक :— श्री रमेशचन्दजी कोटडिया
मुम्बई निवासी, अमेरिका प्रवासी
संरक्षक :— श्री पवन कुमार गोवडिया (सागवाडा)



Scanned by CamScanner

श्री दिनेश खोडनिया (सागवाड़ा)
श्री कीर्तिभाई शाह (सागवाड़ा)

संस्करण :– प्रथम –1999

मूल्य :– ज्ञान प्रचारार्थे सहयोग – 5/– रू

प्रतियाँ :– 2100

प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थान :–

1. धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थान–निकट दि.जैन धर्मशाला – वड़ौत (मेरठ)
2. नव अल्पना प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स – मोदीखाना, जयपुर–3 (राजस्थान)
3. प्रभात कुमार जैन – 4–8 कुंजगली, मु.नगर
4. श्रीमती रत्नमाला जैन – 4–5 आदर्श कोलोनी, पुलां, उदयपुर (राजस्थान)

लेसर टाइप सेटर्स :– श्री कुन्थुसागर ग्राफिक्स सेन्टर, 25, शिरोमणी बंगलोझ, वडौदा एक्स. हाईवे के सामने, अहमदावाद–380026

फोः 5892744



Scanned by CamScanner

# संस्थान का संक्षिप्त परिचय

## 1. धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान का उदात्त उद्देश्य :—

अखिल विश्व के सर्वश्रेष्ठ महान् त्रिकाल अबाधित परम् सत्य को धार्मिक आस्था से दार्शनिक तार्किक पद्धति द्वारा वैज्ञानिक परीक्षण निरीक्षण प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में परिशीलन, परिज्ञान, परिपालन, साक्षात्कार, संदर्शन उपलब्धि करके स्वयं को समग्रता से परिपूर्ण परम् सत्य स्वरूप परिनिर्माण करना है। अतः इसका सर्वोपरी उद्देश्यः—

"संचवं भगवं" सत्य ही परमेश्वर है ।

"सत्यं शिवं सुन्दरम्"

"सच्चिदानन्दम्"

"उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्"



Scanned by CamScanner

"Truth is God and God is truth." । व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र विश्व में उदारता पूर्ण सत्य वैज्ञानिक धर्म के माध्यम से प्रचार शीलता, प्रखरता समरसता सुख शान्ति का प्रचार प्रसार करना है।

## 2. संस्थान के कार्यक्षेत्र :—

(१) आचार्य कनकनन्दी के साहित्य का विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन करना तथा देश–विदेश में प्रचार प्रसार करना ।

(२) संगोष्ठी सम्बन्धी स्मारिका का प्रकाशन करना ।

(३) स्थानीय शिविर से लेकर जिला, प्रदेश राष्ट्रस्तरीय एवं धर्मदर्शन विज्ञान प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना ।



Scanned by CamScanner

(४) राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठियों का आयोजन करना ।

(५) विभिन्न क्षेत्र के योग्य व्यक्तियों को उपाधि पुरस्कारादि देकर सम्मानित करना ।

(६) इंटरनेट तथा टी.वी. के माध्यम से आचार्य श्री के साहित्य, उद्देश्य तथा प्रवचनों का प्रचार–प्रसार करना।

(७) पशु–पक्षी, पर्यावरण, असहाय–व्यक्ति, रोगी, गरीब, पीड़ित व्यक्ति आदि को सहायता पहुँचाना ।

(८) शोध कार्यो के लिए, संस्थान के कार्यों के लिए, साहित्य प्रकाशन सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक उपकरण यथा कम्प्यूटर, कम्प्यूटर लाइब्रेरी, इंटरनेट, ओवर हेड प्रोजेक्ट आदि क्रय करना ।



Scanned by CamScanner

## 3. सर्वजन–सहयोग

सत्य–उपासक, उदारमना, एवं परोपकारी महानुभावों! यह संस्थान "**सर्वजीव हिताय**" "**सर्वजीव सुखाय**" रूपी महान् लक्ष्य को आदर्श मानकर कार्यरत है। अतः यह संस्थान विश्व का विश्व के द्वारा, विश्व के लिए है। अतः अर्थ सहयोग, श्रम सहयोग, शिविर में सहभागी, संगोष्ठी में सहभागी, उपाधि, एवं पुरस्कार प्राप्ति में देश–विदेश के जैन एवं अन्य धर्मावलम्बी सज्जन महानुभावों का भी सादर आमंत्रण, आह्वान, सुस्वागत है।

बन्धुवर !

आप एक विचारशील, स्वाध्याय प्रेमीऔर धर्मवत्सल बन्धु हैं। युवा पीढ़ी हेतु विशेष रूप



Scanned by CamScanner

से पूज्य आचार्य श्री कनकनन्दी जी द्वारा रचित तथा "धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान" और विभिन्न स्थानों से प्रकाशित ग्रन्थों के पठनोपरान्त आप निम्न प्रकार से हमें सहयोग दे सकते हैं। आपका सहयोग हमारे उद्देश्य और लक्ष्य का सम्बल है।

(१) पुस्तकों के विषय में अमूल्य, उपयोगी एवं निष्पक्ष सुझाव देकर।

(२) अन्य स्वाध्याय प्रेमी बन्धुओं से पुस्तक के विषय में चर्चा करके।

(३) अपने इष्ट मित्रों एवं रिश्तेदारों को प्रकाशन की पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा देकर।

(४) यथा शक्ति अप्रकाशित पुस्तकों के प्रकाशन में अपना सहयोग देकर।



Scanned by CamScanner

(ज) प्रकाशित पुस्तकें पर्व आदि पर वितरणार्थ मंगवाकर ।।

## 4. संस्था की नियमावली

(१) विवक्षित पुस्तक के प्रकाशनार्थ द्रव्यदाता को उस किताब की दशमांश प्रतियाँ दी जायेंगी।

(२) ग्रंथ प्रकाशक (द्रव्यदाता) ग्रन्थमाला का आजीवन सदस्य रहेगा तथा उन्हें ग्रंथमाला से प्रकाशित पुस्तक की एक-एक प्रति निःशुल्क दी जावेगी।

(३) साधु, साध्वी, विशिष्ट विद्वज्जन और विशिष्ट धर्मायतनों को पुस्तक निःशुल्क दी जावेगी।

(४) ग्रंथमाला से सम्बन्धित कार्य कर्त्ताओं



Scanned by CamScanner

को प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति निःशुल्क दी जायेगी ।

## आपका आर्थिक सहयोग

(१) आजीवन सदस्यता 5000/-- रु.
(२) संरक्षक 11000/-- रु.
(३) परम संरक्षक 25000/-- रु.
(४) शिरोमणि संरक्षक 51000/- रु.
(५) परम शिरोमणि
संरक्षक 1,00,000/रु.

**आपका अन्य सहयोग :–** संगोष्ठी, शिविर आदि में साहित्य, पुरस्कार आर्थिक सहायता, श्रमदान आदि देकर।

विशेष- संस्थान की प्रत्येक पुस्तक, स्मारिका में संस्थान के कार्यकर्त्ता, शिरोमणि



Scanned by CamScanner

और परम् शिरोमणि संरक्षक के नाम छपेंगे। जो जिस साहित्य या कार्य में अर्थ, श्रम, बौद्धिक सहायता करेगा उसमें उसका नाम प्रकाशित होगा और सम्मानित किया जायेगा।

**आप से प्राप्त धन का सदुपयोग :–**

ज्ञान दान, आजीवन सदस्यता आदि से प्राप्त धन, गुप्तदान, साहित्य–विक्रम से प्राप्त धन, संस्थान को प्राप्त पुरस्कार का धन साहित्य प्रकाशन आदि उपर्युक्त संस्थान के कार्य क्षेत्रों में संस्थान के वैज्ञानिक यंत्रादि क्रय में सदुपयोग किया जाता है।

नँ



Scanned by CamScanner

# मेरी विवशता तथा चिन्ता क्यों? कब?

— आचार्यरत्न कनकनंदी

1. क्योंकि मैं 'सर्वजीव सुखकारी' 'सर्वजीव हितकारी' संकीर्णता से रहित भाव की पवित्रता से युक्त, वैज्ञानिक सत्य, उदार धर्म को चाहता हूँ और उसका प्रचार--प्रसार करना चाहता हूँ परन्तु अधिकांश व्यक्ति विभिन्न संकीर्णता, भाव की मलिनता, अन्ध--विश्वास, अनुदार भाव से युक्त होते हैं और वे धर्म का प्रचार प्रसार इस ही दृष्टि से करना चाहते हैं।.... तब .....

2. कषाय रहित भाव की पवित्रता ही वस्तुतः अहिंसा है परन्तु स्वयं को अहिंसा के अनुयायी मानने वाले भी अधिकांश व्यक्ति



Scanned by CamScanner

ईर्ष्या, द्वेष, तृष्णा, घमण्ड, नाम, ख्याति–पूजा, लाभ से ओत–प्रोत रहते हैं और जिससे आनुशंगिक रूप से भी एकेन्द्रिय जीव की द्रव्य हिंसा हो जाती है उसे हिंसक पापी मानकर उससे घृणा करते हुए और भी हिंसा रूपी सागर में बेसहारा डूबते जाते हैं।..तब

3. भाव को पवित्र करना. संक्लेश भाव से रहित होना, तथा आध्यात्मिक सुख शान्ति को प्राप्त करना धर्म का उद्देश्य है। और इसके लिए विभिन्न धार्मिक क्रिया–काण्ड़ों की आवश्यकता होती है परन्तु जब धार्मिक क्रिया–काण्ड़ों में संक्लेश, धन संग्रह, विग्रह (फूट), अशान्ति, अनुशासन विहीनता पाई जाती है। ..... तब .....



Scanned by CamScanner

4. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' प्रत्येक जीव में परम ब्रह्म का दर्शन करने वाले, जीव में जिनेन्द्र को मानने वाले जब गुरु शिष्य, सधर्मी, पिता–पुत्र, भाई–भाई लड़ते है। दूसरों को नीचा दिखाते है दूसरों को क्षति पहुँचाते हैं, फूट डालते हैं..... तब .....

5. सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवों को रक्षा करने वाले जब पंचेन्द्रिय मनुष्य यहाँ तक कि माता–पिता गुरु–शिष्य को संकट में डालते हैं, असुरक्षा उत्पन्न करते हैं..... तब .....

6. संस्कार, सदाचार, सद्विचार को अपनाना और इसका प्रचार–प्रसार करने रूप प्रभावना को छोड़कर ईंट–पत्थर को इकट्ठा करना (भवन निर्माणादि), धन का



Scanned by CamScanner

संग्रह करना, हाथी घोडा आदमियों की भीड़ लगाना रूपी प्रभावना करते हैं...तब ...

7. जब दिगम्बर जैन साधु तक सिद्धि को छोड़कर प्रसिद्धि, णमोकार को छोड़कर ममकार, धर्म को छोड़कर धन, वात्सल्य भाव को छोड़कर राग, समता को छोड़कर ममता, वीतरागता को छोडकर वित्तरागता, निर्ममत्व को छोड़कर निर्मम के पीछे पड़ते हैं.....तब.....

8. मौनपूर्वक, एकान्तवास करके पूर्णसमता तथा क्षमता के साथ ध्यान, अध्ययन एवं तपश्चरण के माध्यम से पूर्ण सत्य को जानकर--मानकर आचरणकर स्वयं "सत्यसाम्यसुख" स्वरुप बनकर विश्व को भी इसी प्रकार बनाने की भावना भाता हूँ



Scanned by CamScanner

परन्तु शारीरिक असमर्थता (शरीर की उष्णता, भयंकर अम्लपित्त उल्टी, गर्मी से स्वास्थ्य खराब होना भोजन योग्य न होने पर उल्टी-- स्वास्थ्य बिगड़ना आदि) विपरीत परिस्थिति, प्रतिकूल जन–मानस, अयोग्य आहार आदि से भावना को क्रियान्वित नहीं कर पाता हूँ..... तब .....

9. (1) घी को छोड़कर घी के घड़े (घी रहित केवल पूर्व में जिस घड़े में घी था ऐसा घड़ा) को ही घी मान लेने के समान जब जीवन्त यथार्थ धर्म स्वरुप साधु, श्रावकों आदि का अनादर, तिरस्कार करते है उनकी सेवा, सुरक्षा व्यवस्था नहीं करते हैं परन्तु प्रतीक धर्म स्वरूप मन्दिर, मूर्ति आदि को



Scanned by CamScanner

यथार्थ धर्म मानकर उसकी सेवा. व्यवस्था करते हैं..... तब ...

(२) इस ही प्रकार जीव जब भाव की पवित्रता के बदले धार्मिक – क्रिया – काण्डों को, सत्य–धर्म को छोड़कर अन्ध परम्पराओं को, सत्य–तथ्य के परिवर्तन में रीति–रीवाजों को महत्व देता है.. तब..

1 0. शिक्षा, विद्या, ज्ञान, धर्म, राजनीति, संविधान, कानून आदि जीवों के सुख.. शान्ति, सम्बृद्धि, विकास के लिए हैं परन्तु जब मनुष्य इसका दुरुपयोग दुःख अशान्ति, अवरूद्ध विनाश के लिए करता है ..... तब .....

1 1. जो भारत विश्वगुरू, सोने की



Scanned by CamScanner

चिड़िया, अहिंसा प्रधान, आध्यात्मिक, धर्म प्रधान के कारण महान कहलाने वाला था उस देश में जब भ्रष्टाचार, हिंसा, बलात्कार, धोका–धड़ी, गुण्डागर्दी, धर्मान्धता, संकीर्णता, अन्धविश्वास, अकर्मण्यता आदि के कारण गरीब बर्बर, भ्रष्ट, दीन–हीन, कायर विवश, पाया जाता हैं.... तब ....

**परिवार जीवन्त प्रयोगशाला है, जहाँ पर जीवन निर्माण का शुभारम्भ होता है।**

**मन-वचन-काय रूपी पवित्र त्रिवेणी से स्वयं को संगम करो.**



Scanned by CamScanner

# धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान के उद्देश्य एवं नियम

**उद्देश्य :–** धर्म दर्शन विज्ञान एवं संप्रदाय के समन्वयक वैज्ञानिकाचार्य तथा धर्म, दर्शन, इतिहास, शिक्षा, स्वास्थ्य, मंत्र, मनोविज्ञान तथा विज्ञानादि के समीक्षात्मक शोधपूर्ण शताधिक ग्रन्थों के रचयिता आचार्य रत्न श्री कनकनन्दी गुरूदेव के मार्गदर्शन व आशीर्वाद से यह संस्थान कार्यरत है। इसका मुख्य उद्देश्य है विश्व को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए धर्मान्धता तथा संकीर्ण भौतिक विज्ञान से ऊपर उठकर वैज्ञानिक धर्म का प्रचार प्रसार करना। यह संस्थान विश्व के



Scanned by CamScanner

द्वारा, विश्व के लिये, विश्व का है। अतः इसमें प्रत्येक विश्व--मंगल कामनार्थियों को, मन--मन--धन--समय से भाग लेकर सहयोग करने की भावना भाते हैं तथा आह्वान करते हैं।

**नियम :** संस्थान की ओर से साधु--संघों को पुस्तकें नि:शुल्क भेंट की जाती है। पूरे सेट क्रय करने पर पुस्तकालय, वाँचनालय, शिक्षण संस्थाओं के लिये 15% छूट से शास्त्र दिये जाएगें तथा सामान्य स्वाध्याय प्रेमियों के लिये 10% छूट है, डाक खर्च अलग से है।

**आजीवन सदस्यता :** 5001/--रु. अग्रिम भेजने की आवश्यकता है। द्रव्यदाता



Scanned by CamScanner

आजीवन सदस्य व कार्यकर्त्ताओं को संस्थान की ओर से समस्त पुस्तकें नि:शुल्क दी जाती हैं। आर्थिक दृष्टि से समर्थ सामान्य व्यक्ति से उचित मूल्य इसलिये प्राप्त किया जाता है कि जिससे साहित्य का अवमूल्यन न हो, योग्य व्यक्ति को ज्ञानदान (सहयोग) हो, साधु आदि को नि:शुल्क साहित्य भेजने में आर्थिक आपूर्ति हो एवं उस सहयोग से अधिक साहित्य का प्रकाशन प्रचार–प्रसार हो। द्रव्यदाता को उस द्रव्य से प्रकाशित प्रतियों की एक दशमांश प्रतियाँ भी नि:शुल्क प्राप्त होगीं। पुस्तकें छपवाने वाले यदि लागत रूपयों में से कुछ रूपये देने में असमर्थ होंगे तो संस्थान उसकी आर्थिक सहायता के साथ साथ



Scanned by CamScanner

अन्यायन्य सहायता करके उनके नाम पर ही उसकी पुस्तक छपा देगा। इसमें संस्थान का कोई निहित स्वार्थ नहीं है। परन्तु ज्ञान–प्रसार एक मात्र उद्देश्य है। जो ज्ञान–प्रेमी, ज्ञानदानी, महानुभाव, ज्ञानदान, गुप्तदान, सहायता करना चाहते हैं वे सहर्ष, स्वेच्छा से करें। क्योंकि संस्थान के लिये चन्दा, याचनादि नहीं की जाती है। अधिक सहायता करने वाले को संस्थान में पदभार भी दिया जाता है।

**आजीवन सदस्य ध्यानदें :–** साथ ही जिन आजीवन सदस्यों ने 1100/– रू. सदस्यता के रूप में दिये हैं उन्हें पुनः 3000/–रूपया देना पड़ेगा, इसी प्रकार जिन्होंने 2100/– से लेकर 2500/–



Scanned by CamScanner

रूपया दिया है वे पुनः 2000/– रूपया निम्न पते पर भेजने की कृपा करें। हमें ऐसा इसलिए करना आवश्यक हुआ है क्योंकि आचार्य श्री के अनेक बड़े ग्रन्थ प्रकाशित हो गये हैं। तथा कई ग्रन्थों की माँग अधिक होने के फलस्वरूप उनको पुनः अधिक संख्या में प्रकाशन होने के साथ ही डाक व्यय अधिक होने के कारण उपर्युक्त व्यय भार बढ़ गया है। अतः आजीवन शुल्क अतिरिक्त भेजने की आवश्यकता है इसके बिना बड़े ग्रन्थ एवं नवीन ग्रन्थ आपके पास भेजने के लिए असमर्थ हैं। साहित्य प्रकाशन करनेवाले ज्ञानदानी तथा आजीवन सदस्य आदि को समस्त साहित्य निःशुल्क प्राप्त होते हैं। परम



Scanned by CamScanner

शिरोमणि संरक्षक एवं शिरोमणि संरक्षक का नाम प्रत्येक पुस्तक एवं संस्थान के लेटर हेड में आयेगा।

## संस्थान के लिए आपका सहयोग

(1)आजीवन सदस्यता 5001.0 रु.

(2)संरक्षक 11000.00 रु.

(3)परम संरक्षक 25000.00 रु.

(4)शिरोमणि संरक्षक 51000.00 रु.

(5)परम शिरोमणि संरक्षक 100000 रु.

Scanned by CamScanner

## ''आचार्यश्री कनकनन्दीजी द्वारा रचित ग्रन्थ''

| क्रम | शीर्षक | मूल्य |
|---|---|---|
| (1) | धर्म विज्ञान बिन्दु | 15.00 रू. |
| (2) | धर्म ज्ञान एवं विज्ञान | 15.00 रू. |
| (3) | भाग्य एवं पुरूषार्थ (पंचम संस्करण) | 15.00 रू. |
| (4) | Fate and Efforts | 15.00 रू. |
| (5) | व्यसनका धार्मिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण(द्वि.सं) | 20.00 रू. |
| (6) | Nakedness of Digamber Jain Saints and Kesh Lonch (तृतीय संस्करण) | 5.00 रू. |
| (7) | पुण्य पाप मीांसा (द्वितीय) | 15.00 रू. |
| (8) | जिनार्चना पुष्प (1) (तृ.सं.) | 15.00 रू |
| (9) | जिनार्चनापुष्प (2) | 21.00 रू. |



Scanned by CamScanner

(10)निमित्त उपादान मीमांसा 9.00 रू.
(द्वि. सं.)
(11) धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान– 20.00 रू.
पुष्प–1 (द्वितीय संस्करण)
(12) धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान पु.(2)20.00 रू.
(13) धर्म दर्शन विज्ञान (द्वि.सं.) 51.00 रू.
(14)क्रांति के अग्रदूत (द्वि. सं.) 21.00 रू.
(15)लेश्या मनोविज्ञान (द्वि. सं.)11.00 रू.
(16) ऋषभपुत्र भरत से भारत 21.00 रू.
(द्वितीय संस्करण)
(17) ध्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण 21.00 रू.
(द्वितीय संस्करण)
(18) अनेकांत दर्शन 20.00 रू.
(19) कर्म का दार्शनिक एवं 45.00 रू.
वैज्ञानिक विवेचन (द्वि. सं.)



Scanned by CamScanner

| | |
|---|---|
| (20) अहिंसामृतम् | 7.00 रू. |
| (21) युग निर्माता ऋषभदेव | 15.00 रू. |
| (22) विश्वशांति के अमोध उपाय (द्वितीय संस्करण) | 10.00 रू. |
| (23) मनन एवं प्रवचन (द्वि. सं.) | 5.00 रू. |
| (24) विनय मोक्ष द्वार | 6.00 रू. |
| (25) क्षमा वीरस्य भूषणम् (द्वि.सं.) | 1500 रू. |
| (26) संगठन के सूत्र (द्वि. सं.) | 25.00 रू. |
| (27) अति मानवीय शक्ति (द्वि.सं.) | 31.00 रू. |
| (28) मंत्र विज्ञान (द्वितीय संस्करण) | 25.00 रू. |
| (29) Philosophy of Scientific Religion | 21.00 रू. |
| (30) दिगम्बर साधु का नग्नत्व एवं केंशलोंच (एकादश संस्करण) (हिन्दी.मराठी.गुजराती) | 5.00 रू. |



Scanned by CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| (31) | भगवान महावीर व उनका दिव्य संदेश | 5.00 रु. |
| (32) | धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका पुष्प I (पंचम संस्करण) | 10.00 रु. |
| (33) | संस्कार (हिन्दी) (एकादश सं.) | 5.00 रु. |
| (34) | विश्व विज्ञान रहस्य | 100.00 रु. |
| (35) | संस्कार (गुजराती) | ---------- |
| (36) | स्वप्न विज्ञान (द्वितीय सं.) | 51.00 रु. |
| (37) | त्रैलोक्य पूज्य ब्रह्मचय (द्वि.सं.) | 25.00 रु. |
| (38) | आत्मोत्थानोपायः तपः | 9.00 रु. |
| (39) | तत्त्वानुचिंतन | 5.00 रु. |
| (40) | विश्व इतिहास | 25.00 रु. |
| (41) | शकुन विज्ञान | 30.00 रु. |
| (42) | संस्कार सचित्र (तृतीय संस्करण) | 11.00 रु. |
| (43) | कथा सुमन मालिका | 15.00 रु. |



Scanned by CamScanner

(44) 72 कलाएँ 5.00 रू.
(45) हिंसामय यज्ञ का प्रारम्भ क्यों ? 7.00 रू.
(46) कथा सौरभ 21.00 रू.
(47) कथा पारिजात 15.00 रू.
(48) धर्म प्रबर्तक चौबीस तीर्थंकर 11.00 रू.
(द्वितीय संस्करण)
(49) जीने की कला 7.00 रू.
(50) संस्कार–(वृहत्) 30.00 रू.
(51) स्वतंत्रता के सूत्र 71.00 रू.
(52) कथा पुष्पांजलि 15.00 रू.
(53) धार्मिक कुरूतियों का परिशोधन 5.00 रू.
(54) सत्य धर्म 5.00 रू.
(55) धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका 15.00 रू.
का पुष्प 2 (पंचम संस्करण)
(56) आ.कनकनन्दी की दृष्टिमें शिक्षा 11.00रू.



Scanned by CamScanner

(57) अयोध्या का पौराणिक ऐतिहासिक एवं राजनैतिक विश्लेषण 11.00 रु.

(58) गुरू अर्चना 3.00 रु.

(59) दंसण मूलो धम्मो तहा संसार मूल हेतु मिच्छतं 15.00 रु.

(60) धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका पुष्प 3 (तृतीय संस्करण) 21.00 रु.

(61) संस्कार (अंग्रेजी) 5.00 रु.

(62) श्रमण संघ संहिता 30.00 रु.

(63) युग निर्माता ऋषभदेव (अंग्रेजी) 51.00 रु.

(64) पार्श्वनाथका तपोपसर्ग कैवल्य धाम बिजौलिया 15.00 रु.

(65) भारतीय आर्य कौन– कहाँ से कब से कहाँ के ? 25.00 रु

(66) ये कैसे धर्मात्मा–निर्व्यसनी– राष्ट्रसेवी 11.00 रु.



Scanned by CamScanner

| | |
|---|---|
| (67) विश्वधर्म सभा–समवशरण | 21.00 रू. |
| (68) ''बंधु बंधन के मूल'' | 61.00 रू. |
| (69) विश्व द्रव्य विज्ञान (द्रव्य संग्रह) | 41.00 रू. |
| (70) आदर्श आहार– विहार विचार | 35.00 रू |
| (71) उपवास का धार्मिक वैज्ञानिक विश्लेषण | 15.00रू. |
| (72) पूजा से मोक्षःपुण्य तथा पाप भी | 21.00रू. |
| (73) आदर्श नागरिक की प्रायोगिक क्रियाएँ | 7.00 रू. |
| (74) सत्य साम्य सुखामृतम्– प्रवचनसार | 301.00रू. |
| (75) अग्नि परीक्षा | 11.00 रू. |
| (76) कथा चिंतामणि | 11.00 रू. |
| (77) उठो! जागो! प्राप्त करो!!! | 15.00 रू. |



Scanned by CamScanner

| | |
|---|---|
| (78) सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (वृहत्) | 201.00रू. |
| (79) सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (छोटा) | 21.00 रू. |
| (80) संस्कार (मराठी) | 10.00 रू. |
| (81) भ्रष्टाचार उन्मूलन | 7.00 रू. |
| (82) आहारदान से अभ्युदय | 9.00 रू. |
| (83) बालबोध जैनधर्म | 7.00 रू. |
| (84) नग्न सत्य का दिग्दर्शन | 15.00 रू. |
| (85) ज्वलंत शंकाओं का शीतल समाधान (द्वितीय संस्करण) | 41.00 रू. |
| (86) आहार दान विधि (हिन्दी मराठी) पच्चीसवा संस्करण | ---- |
| (87) शाश्वत समस्याओं का समाधान | 18.00 रू. |



Scanned by CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| (88) | जैन धर्मावलम्बी संख्या और उपलब्धि | 21.00 रू. |
| (89) | भाव एवं भाग्य तथा अंग विज्ञान | 151.00 रू. |
| (90) | कथा त्रिवेणी | 8.00 रू. |
| (91) | स्मारिका (प्रथम संगोष्ठी) | 81.00 रू. |
| (92) | पुरूषार्थ सिद्ध्युपाय | 101.00 रू. |
| (93) | Leshya Psychology | 11.00 रू. |
| (94) | जीवन्त धर्म : सेवा धर्म | 11.00 रू. |
| (95) | स्मारिका (द्वितीय संगोष्ठी) | 51.00 रू. |
| (96) | भविष्य–फलविज्ञान | 101.00 रू. |
| (97) | What Kinds of "DHARMATMA" (plous man)These Are | 21.00 रू. |
| (98) | अनेकान्त के प्रकाश में मोक्षमार्ग | 21.00 रू. |



Scanned by CamScanner

(99) संस्कार (कन्नड़) 15.00 रू.

(100) दिगम्बर जैन साधु नग्न क्यों (उर्दू) 11.00 रू.

(101) युग निर्माता भ. ऋषभदेव (द्वितीय संस्करण) 41.00 रू.

(102) युग निर्माताभ. ऋषभदेव (पद्यानुवाद) 5.00 रू.

(103) इष्टोपदेश 51.00 रू.

(104) अपुनरागमपथ : मोक्षपथ 5.00 रू.

**विशेष :–** आजीवन सदस्यता आदि ज्ञान–दान, गुप्त–दान, साहित्य विक्रय आदि से प्राप्त धन का सदुपयोग साहित्य प्रकाशन, ज्ञान के प्रचार–प्रसार, संस्थान के उपकरण, वैज्ञानिक–यंत्रादि के लिए किया जाता है।



Scanned by CamScanner

# अपुनरागमन पथ : मोक्ष पथ

**दर्शनमात्म विनिश्चितिरात्मपरिज्ञान, मिश्यते वोधः।**
**स्थितिरात्मनि चरित्रं निश्चय– रत्नत्रयं वन्दे ॥**

अनादि आवहमान काल से संसार के मध्य में चतुर्गति रूपी पथ के पथिक अनन्तों बार गमनागमन करते हुये भी अपना लक्ष्य गन्तव्य स्थल को एक बार भी प्राप्त नहीं कर सकते कारण उनका गमन पुनरागमन में परिवर्तित हो जाता है। ठीक ही है--कौन बुद्धिमान पथिक अपने गन्तव्य स्थल को प्राप्त किये बिना ही उसका गमन स्थगित कर देता है। वह पथिक अनादि अनन्त काल से अविश्रांत गमन करते हुये भी अपने लक्ष्य स्थल में नहीं पहुँचने का कारण क्या है?



Scanned by CamScanner

इसका सिर्फ एक ही उत्तर 'विपरीत गमन'। यदि किसी पथिक का लक्ष्य एक सरल रेखा के पूर्व में पहुँचने का है, किन्तु वह उस सरल रेखा के पश्चिम दिशा में गमन कर रहा है, तो वह अनन्त भविष्यत काल पर्यन्त कितना ही क्षिप्र गति में गमन करे तो भी वह उस सरल रेखा को पूर्व दिशा में नहीं पहुँच सकता। यदि वह सम्यक् मार्ग में गमन करना प्रारम्भ कर देगा तब वह निश्चित रूप से एक ना एक दिन अपने लक्ष्य स्थान को प्राप्त करके पुनः पुनरागमन नहीं करेगा। वह अनुपम, अनादि काल से अप्राप्य अत्यन्त दुर्लभ, अत्यन्त सरल एवं प्रशस्य पथ हुआ–

**"सम्यक् दर्शनज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः।"**

सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक्



Scanned by CamScanner

चारित्र तीनों का एकीकरण ही अनुपरागमन पथ है।

दंसणणाण चरित्ताणि मोक्खमग्ग जिणा विंति।

"Self reverence, self knowledge

and self control

These three alone lead life to"

"sovereign power".

आत्म विश्वास, आत्म ज्ञान एवं आत्म नियंत्रण तीनों मिलकर जीवन को एक महान शक्ति की ओर ले जाते हैं।

The unity of heart, head and hand leads to liberation.

हृदय • (श्रद्धा) मस्तिष्क (ज्ञान) हस्त



Scanned by CamScanner

(आचरण) के ऐक्य से मुक्ति प्राप्त होती है. यह पथ पथिक को अपने लक्ष्य स्थल में पहुँचा देते हैं. एवं पथिक वहाँ पहुँचकर अनादि कालीन गमनागमन के पथक्लांत से निवृति होकर भविष्यत अनन्तकाल अनुपरागमन करके वहाँ कृत–कृत्य होकर अनन्त सुख का अनुभव करता है अतः इस पथ को धर्म भी कहते है। **'यः कर्म निवर्हणम्ः संसार दुखतः सत्त्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे सः धर्मः'** ।अर्थात् जो कर्मों के नाशक, गमनागमन के (संसार) दुःखों से जीवों को निकालकर अपुनरागमन स्थल में (मोक्ष) में पहुँचा देता हैं, उसको धर्म कहते हैं। इससे विपरीत जो पथिक को अलक्ष्य स्थल में (संसार) में गमनागमन करता है वह दुःख होने के कारण पुनरागमन



Scanned by CamScanner

पथ (अधर्म) है अर्थात् **'यदि प्रत्यनीकानी भवन्ति भव पद्धति'**। जो सुख देने वाला है वह धर्म है जो धर्म है वह वस्तु का अपना स्वभाव है **'वत्थु सुहावो धम्मो'**।

"The religion is the character-istic of the substance".

जो अपना स्वभाव है उसका ही सेवन करना चाहिये अर्थात् अपने स्वभाव में रमण करना ही अपुनरागम पथ है, निश्चय से यह पथ पथिक का (आत्मा) का स्वभाव है।

**दंसणणाण चरित्ताणि सेविदव्वाणि साहुणा णिच्चं।**
**ताणि पुण जाण तिण्णिवि अप्पाणं चेव णिच्छयदो॥**

**(स. सा 19)**

Right belief, knowledgeand conduct should always be persued



Scanned by CamScanner

by a saint from the practicle stand point know all these three again, to be the soul itself from the real-stand-point.

यह पथ अन्य कोई अचेतन पदार्थों से बनाया हुआ नहीं है, क्योंकि यह पथ अन्य अचेतन द्रव्य में पाया नहीं जाता है, **'दंसणणाण चरित्तं किंचिवि णत्थि दु अचेदणे विसए'**।

सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चरित्र आत्मा का स्वभाव होने पर भी स्वयं की दुर्बलता का सुयोग लेकर मिथ्या दर्शन, ज्ञान, चरित्र आत्मा को अनादि से चर्तुगति में गमनागमन करा रहे हैं। जब पथिक कालादि लब्धि प्राप्त करके त्रयात्मक अपुनरागमन पथ को प्राप्त कर लेता है तब वह अपने लक्ष्य के अभिमुख



Scanned by CamScanner

गमन करना प्रारम्भ कर लेता है एवं संपूर्ण त्रयात्मक पथ को प्राप्त करने के बाद वहाँ कृत–कृत्य होकर निवास करता है। वह त्रयात्मक पथ हुआ– 1 **'दर्शनमात्मविनिश्चत'**– आत्मा का निश्चय करना सम्यक् दर्शन है। 2 **'आत्मपरिज्ञान=मिष्यतेबोधः'**– आत्म का परिज्ञान सम्यक् ज्ञान है। 3 **'स्थितिरात्मानि चारित्रं'**– आत्मा में ही रहना सम्यक् चारित्र है।

जब पर्यायार्थिक दृष्टि से देखते हैं तब यह पथ त्रयात्मक है किन्तु जब द्रव्यार्थिक दृष्टि से देखते हैं तब वह पथ शुद्ध आत्मा ही है।

चतुर्गति के पथिक के जब पंचमगति प्राप्त करने का समय उत्कृष्ट से अर्धपुद्गल परावर्तनकाल एवं जघन्य से अन्तर्मुहूर्त काल बाकी रह जाता है तब उसको सम्यक् मार्ग



Scanned by CamScanner

का श्रद्धान (सम्यक् दर्शन) होता है, श्रद्धान के साथ साथ उसको सम्यक् ज्ञान हो जाता है। उस समय उसके आनन्द–अश्रु के साथ साथ दुःखाश्रु बहने लगते हैं। अनन्त कालीन पथ भ्रष्ट, क्लान्त पथिक जब अपने पथ को प्राप्त कर लेता है तब आनन्द–अश्रु विगलित करता है एवं पूर्व के स्वयं की भूल के कारण को स्मरण करके दुःखाश्रु विगलित करता है। लक्ष्य स्थल में निश्चित रूप में पहुँचा देने के पथ को प्राप्त करके वह लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उस ओर अपना पदक्षेप (सम्यक् चारित्र) प्रारम्भ कर देता है। जितना जितना वह अग्रसर होता है उतना–उतना अपने लक्ष्य स्थल के निकट होता जाता है। इस प्रकार त्रयात्मक मार्ग में से अपने लक्ष्य स्थल



Scanned by CamScanner

में पहुँच जाता है। यदि एक भीअंग कम हो जायेगा तब वहअपने लक्ष्य स्थल में प्रवेश नहीं कर सकता । कहा है–

**हतं ज्ञानं क्रिया हीनं हता चाज्ञानिनां क्रिया ।**
**धावन् किलान्धको दग्धः पश्यन्यपि च पंगुलः।(त.रा)**
**संयोगमेवहि वदंति तज्ज्ञा नह्ये चक्रेण रथः प्रयाति ।**
**अंधच पंगुश्च वनं प्रविष्टो तौ संप्रयुकतौ नगरं प्रविष्टो॥**

चारित्र के बिना ज्ञान नष्ट है अर्थात् किसी काम का नहीं एवं ज्ञान के सहचारी दर्शन भी किसी काम का नहीं। जिस तरह वन में आग लग जाने पर उसमें रहने वाला पंगु मनुष्य वहाँ से निकल जाने के मार्ग को जानता है कि 'इस मार्ग से जाने पर मैं अग्नि से बच सकूंगा'इस बात का उसको श्रद्धान भी है परंतु चलने रूप क्रिया (चारित्र) नहीं कर



Scanned by CamScanner

सकता इसलिए वहीं जलकर नष्ट हो जाता है। उसी प्रकार ज्ञान (ज्ञान के सहचर दर्शन) रहित क्रिया (चारित्र) भी निरर्थक है जिस प्रकार वहीं रहने वाला अंधा जहाँ–तहाँ दौड़ने रूप क्रिया करता है किन्तु न उसको मार्ग का ज्ञान एवं श्रद्धान ही है कि यह निश्चित मार्ग नगर में पहुँचाने वाला है। इसलिए वह वहीं जलकर नष्ट हो जाता है।

दो चक्रवाला रथ एक चक्र से गमन नहीं कर सकता। उसी प्रकार अकेले सम्यक् दर्शन या सम्यक् ज्ञान या सम्यक् चारित्र से मोक्ष नहीं प्राप्त हो सकता क्योंकि यह सिद्धांत है जो काम तीन कारणों से होता है वह कार्य एक किम्बा दो कारणों से नहीं हो सकता। तीनों ही कारणों के समवाय से ही उस कार्य की सिद्धि



Scanned by CamScanner

हो सकती है. जिस प्रकार वन में आग लगने पर जब अन्धा और लंगडा पृथक् पृथक् रहते हैं तब तो वे वहीं जलकर नष्ट हो जाते हैं, किन्तु जिस समय वे मिल जाते हैं अर्थात् अन्धे के कन्धे पर लंगडा बैठकर अन्धे को रास्ता दिखाये, अन्धा उसके अनुसार क्रिया करे तो दोनों ही नगर में आ सकते हैं। इसी प्रकार सम्यक्, दर्शन, ज्ञान, चारित्र तीनों का समावय ही मोक्ष मार्ग है। **'अनन्ताः सामयिक सिद्धा'** से भी सिद्ध होता है कि तीनों का समवाय ही मोक्ष मार्ग है. ज्ञान रूप आत्मा के तत्व श्रद्धान पूर्वक ही सामायिक रूप चारित्र हो सकता है। सामयिक अर्थात् पाप योगों से निवृत्त होकर अभेद समता और वीतरागता में स्थित होना है।



Scanned by CamScanner

इस त्रयात्मक मार्ग में जिसके नेतृत्व में कार्य प्रारम्भ होता है वह हुआ सम्यक् दर्शन। क्योंकि **तस्मिन् सत्येव यतो भवति ज्ञान चारित्रंच।'** सम्यक् दर्शन के होने पर ही सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र होता है। जिस प्रकार प्रथम में एकादि संख्या के बिना अनेक शून्य '0' का मूल्य कुछ नहीं होता। किन्तु प्रथम में एकादि संख्या के सद्भाव में उत्तर के शून्य का मूल्य में दश गुना वृद्धि हो जाती है। उसी प्रकार सम्यक् दर्शनके बिना **'शमबोध वृत्तं तपसां पाषाण स्यैव गौरवं पुसः'** हो जाता है। अर्थात् सम्यक् दर्शन के बिना कषायों के उपशमन. ज्ञान. चारित्र और तप इनका महत्व पाषाण के भारीपन के समान व्यर्थ है।**'पूज्य महामणेरिव तदेव सम्यकृत्व संयुक्तम्'** परंतु वही उनका



Scanned by CamScanner

महत्व यदि सम्यक्त्व से सहित है तो वह मूल्यवान मणि के महत्व के समान पूजनीय है। इसलिए सम्यक् दर्शन मोक्ष मार्ग में ज्ञान, चारित्र की अपेक्षा श्रेष्ठ एवं कर्णधार के समान है। परन्तु सम्यक् दर्शन से ही एकान्त से मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती। यदि दर्शन मात्र से ही मोक्ष माना जाय तो सम्यक् दर्शन प्राप्ति के बाद उत्कृष्ट से अर्धपुद्गल परावर्तन काल पर्यंत क्यों संसार में परिभ्रमण करते हैं? क्षायिक सम्यक् दृष्टि के दर्शन मोहनीय के समस्त कर्म क्षय हो जाने के बाद भी वह उत्कृष्ट से आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम पूर्व कोटि अधिक तेंतीस सागर पर्यंत संसार में क्यों भ्रमण करते हैं? सम्यक् दर्शन की पूर्णता 12वें गुणस्थान में हो गई तो भी संसार में



Scanned by CamScanner

उत्कृष्ट से 8 वर्ष कुछ अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटी वर्ष तक क्यों विहार करते हैं ? इन समस्त प्रश्नों का उत्तर एक ही है– अभी तक सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् चरित्र की पूर्णता का अभाव।

यदि एकान्त से ज्ञान मात्र से ही मोक्ष माना जाय तो, एक क्षण भी पूर्ण ज्ञान के बाद संसार में ठहरना नहीं हो सकेगा, उपदेश, तीर्थ – प्रवृति आदि कुछ भी नहीं हो सकेगें। परन्तु 13वें गुणस्थान में सम्पूर्ण ज्ञान होने पर भी उत्कृष्ट से 8 वें कुछ अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि वर्ष तक मंगल विहार करते हुये अपुनरागमन पथ का उपदेश देते हैं। यह संभव ही नहीं कि दीपक भी जल जाये और अंधेरा भी रह जाय। उसी तरह यदि ज्ञान मात्र



Scanned by CamScanner

से ही मोक्ष हो तो वह संभवही नहीं हो सकता कि ज्ञान भी हो जाय और मोक्ष नहीं हो। यदि पूर्ण ज्ञान होने पर भी कुछ संस्कार (चार अघातिया कर्म) ऐसे रह जाते हैं जिसके नाश हुये बिना मुक्ति नहीं हो सकती। इससे यह सिद्ध हुआ कि संस्कार क्षय से मुक्ति होगी ज्ञान मात्र से नहीं। फिर इन संस्कारों का क्षय ज्ञान से होगा या अन्य कारण से ? यदि ज्ञान से है तो ज्ञान होते ही संस्कारों का क्षय भी हो जायेगा और उत्तर क्षण में ही मोक्ष हो जाने से तीर्थोपदेश आदि नहीं बन सकेंगे। यदि संस्कार क्षय के लिए अन्य कारण अपेक्षित हों वह चारित्र ही हो सकता है, अन्य नहीं। मोक्ष प्राप्ति रूप कार्य तीनों कारणों से होता है। 13 वें गुणस्थान तक दर्शन एवं ज्ञान की पूर्णता



Scanned by CamScanner

हो गई तो भी कार्य नहीं हुआ। यह नियम है कि 'प्रतिबन्धक का अभाव होने पर सहकारी समस्त सामग्रियों के सद्भाव को समर्थ कारण कहते हैं एवं समर्थ कारण के होने पर अनन्तर समय में कार्य की उत्पत्ति नियम से होती है।' अतः 'पारशेशिक' न्याय से सिद्ध हुआ कि संस्कारों का पूर्ण रूप से नाश का अभाव सम्यक्–चारित्र की पूर्णता के अभाव से ही है। 14वें गुणस्थान में चारित्र की पूर्णता से प्रतिबन्धक का नाश होता है एवं अनन्तर समय में मोक्ष रूपी कार्य की उत्पत्ति नियम से होती है। इसमें अनन्तर पूर्व–क्षण–वर्ती मोक्ष चरित्र पर्याय उपादान कारण है, और उत्तर क्षण रूपी पर्याय कार्य है। इससे सुनिश्चित सिद्ध हुआ मोक्ष रूपी कार्य में



Scanned by CamScanner

उपादान कारण सम्यक् चारित्र है। सम्यक् चारित्र की पूर्णता शैलेशों के अर्थात् 14वें गुणस्थान में होता है।

**सीलेसिं संपत्तो णिरूद्धणिरवसेस आसवोजीवो।**
**कम्मरयविप्पमुक्को गयजोगी केवली होदि ॥**
**(गो.सा.जी.65)**

जो सम्पूर्ण 18000 शील का (चारित्र के) स्वामी हो चुका है और पूर्ण संवर तथा निर्जरा का सर्वोत्कृष्ट एवं अन्तिम पात्र होने से मुक्तावस्था के सम्मुख है। समस्त प्रकार के योग से रहित है। अनुपरागमन पथ के यात्री, अपुनरागमन पथ के समर्थ कारण हैं, उन्हीं को ही अयोगकेवली किम्वा शील का अर्थात् चारित्र का स्वामी कहा जाता है।

अपुनरागमन पथ के पथिकों ने इस



Scanned by CamScanner

चारित्र से परम उपकार को हृदयगम करके उसके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापन कराने के लिये चारित्र की अन्यन्य स्तुति करते हैं एवं उसका आशिर्वाद की कामना करते हैं। यथाः-

**शिव–सुख फलदायि यो दयाछाय– योद्धः,**
**शुभ–जन–पथिकानां खेदनोदे समर्थः ।**
**दुरितरविजतापं प्रापयन्नतंभावं,**
**स भव विभव हान्यै नोस्तु चारित्रवृक्षः ॥**

जो पथिकों के मोक्ष रूपी शाश्वतिक अनुपम सुख रूपी फल को देने वाला है, शान्ति प्रदान करने वाला, दया रूप छाया से प्रशस्त है, जो कि पथिकों के संताप को दूर करने में समर्थ है, पाप रूप सूर्य के संताप का अन्त करने वाला है वह चारित्र वृक्ष हमारे



Scanned by CamScanner

संसार में जो गमनागमनादि भव है, उसके विनाश के लिये होवे।

पथिकों ने केवल अत्यन्त मधुर, लालित्य, लच्छेदार शब्द से स्तुति करके अपना मनमना पांडित्यपना प्रगट करके कालादि लब्धि के ऊपर अपने कर्तव्य को तिलांज्जलि देकर प्रमादि होकर संसार भोगों में लिप्त नहीं रहे परन्तु प्रमाद त्याग करके अनगुह्यवलवीर्य के अनुसार चारित्र का पालन किये।

**चारित्रं सर्व जिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येभ्यः।**
**प्रणमामि पंचभेदं पंचम चारित्र लाभाय।**
**(वीर भक्ति)**

समस्त तीर्थंकरों ने, स्वयं चारित्र को धारण किया एवं समस्त शिष्यों को चारित्र धारण करने का उपदेश दिये। अतः समस्त



Scanned by CamScanner

कर्मो के क्षय के साधक पंचम यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति के लिये सामायिकादि पंच भेद से युक्त चारित्र को मैं प्रणाम करता हूँ।

सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र में पूर्व की प्राप्ति होने पर उत्तर की प्राप्ति भजनीय है अर्थात् हो भी न भी हो। परन्तु उत्तर की प्राप्ति में पूर्व की प्राप्ति निश्चित है वह होगा ही। जिसे सम्यक् चारित्र होगा उसे सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन होंगें ही परन्तु जिसे सम्यक् दर्शन है उसे पूर्ण सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र हो भी और न भी हो। क्षायिक सम्यक् दर्शन की प्राप्ति होने पर क्षायिक ज्ञान हो भी और न भी हो, किन्तु जहाँ क्षायिक ज्ञान है वहाँ क्षायिक सम्यक् दर्शन निश्चित रूप में ही है, परन्तु वहाँ सम्पूर्ण



Scanned by CamScanner

क्षायिक सम्यक् चारित्र हो भी न भी हो। किन्तु जहाँ सम्पूर्ण क्षायिक चारित्र है वहाँ सम्पूर्ण क्षायिक सम्यक् दर्शन एवं सम्पूर्ण क्षायिक ज्ञान होगा ही. इस प्रकार सम्यक् चारित्र में त्रयात्मक मार्ग रहेगा ही।

चारित्र की उपादेयता इह लोक, पर लोक, देश, समाज, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, व्यक्तिगतादि प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक है, यह सारा विश्व स्वीकार करता है। यथा-

If wealth is lost nothing is lost,
If health is lost something is lost,
If character is lost everything is lost.

यदि धन नष्ट हुआ, तो कुछ नष्ट नहीं हुआ क्योंकि धन पुद्गल की पर्याय है एवं



Scanned by CamScanner

पुण्य का दास है। पुद्गल का स्वभाव मिलना एवं वियोग होना है। धन आत्मा से अत्यन्त भिन्न है। यदि स्वास्थ्य नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट हुआ क्योंकि **'शरीर माध्यम् खलु धर्म साधनम्'** अर्थात् शरीर के माध्यम से धर्म साधन होता है, अतः स्वास्थ्य नष्ट होने से धर्म में आघात होने से कुछ नष्ट होता है। यदि चारित्र नहीं रहा तो सर्वस्व ही नष्ट हो गया, क्योंकि चारित्र जीव का स्वभाव, सर्वस्व धर्म है। **'चारित्तं खलु धम्मो'** अर्थात् चारित्र निश्चय से धर्म है। धर्मो के समुदाय ही धर्मि है। यदि धर्म ही नहीं रहा तब धर्मी (वस्तु) कैसे रह सकता है, जैसे अग्नि का प्रकाशत्व, उष्णत्व, पाचकत्व आदि धर्म नहीं रहेगा तो अग्नि ही कैसे रह सकती है ? किन्तु जिस पथिक का



Scanned by CamScanner

अपुनरागमन पथ प्राप्त करने की समयाबधि अन्यन्त अधिक है उसकी प्रवृत्ति विपरीत होती है।– यथा

**'जानामि धर्म न च मे प्रवृत्ति, जानामि अधर्म न च मे निवृत्तिः।'**

धर्म को जानूँगा किन्तु धर्म से प्रवृत्ति नहीं करूँगा अधर्म को जानूँगा किन्तु अधर्म से निवृत्ति नहीं करूँगा। ऐसी विचारधारा स्वतंत्र न होकर स्वच्छंद होती है ।

As like this-

If character is lost nothing is lost. If health is lost something is lost, If wealth is lost everything is lost.



Scanned by CamScanner

यदि चरित्र नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट नहीं हुआ क्योंकि यह तो बाह्य वस्तु है। यदि स्वास्थ्य नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट हुआ। क्योंकि धन कमाने में एवं भोग करने में आघात हुआ। किन्तु धन नष्ट हुआ तो सर्वस्य नष्ट हो गया। क्योंकि :

Gold is god and God is gold.

अर्थात् सुवर्ण/धन भगवान है एवं भगवान सुवर्ण है, अतः धन नष्ट होने से सब कुछ नष्ट हो गया। इस प्रकार जिसका श्रद्धानज्ञान एवं आचरण है वह अपने गमनागमन पथ को प्रशस्त कर रहा है। परन्तु जो अपुनरागमन के पथिक है उसका आचरण इससे विलक्षण होता है।



Scanned by CamScanner

दया दम त्याग समाधि संसतैः
पथि प्रयाहि प्रगुण प्रयत्नवान्।
नयत्यवश्यं वचनामगोचरं
विकल्पदूरं परमं किमप्यसौ॥
(आत्मा. 107)

हे अपुनरागमन पथ के पथिक! तू अत्यन्त प्रयत्नशील होकर सरल भाव से धर्म के मूलदया, गमनागमन पथ के अत्यन्त दुर्निवार 5 इन्द्रिय रूपी अश्व का दमन, अपुनरागमन पथ के बोझ स्वरूप अन्तरंग एवं बहिरंग 24 प्रकार के परिग्रह का त्याग और अपुनरागमन पथ में गति करने रूप ध्यान की परम्परा के मार्ग में प्रवृत्त हो जाओ, वह मार्ग निश्चय से तुम्हारा अनन्त काल से अप्राप्य लक्ष स्थल जो अत्यन्त उत्कृष्ट निरापद स्थान को प्राप्त



Scanned by CamScanner

करता है जो वचन से अनिर्वचनीय एवं समस्त गमनागमन विकल्पों से रहित है; वह ही तुम्हारा अविनश्वर अपुनरागम पथ का फल है। शाश्वतिक सुख, अनुपम, आल्हाद, सच्चिदानंद रूप है। अतएव अनादि कालीन पथ भूले पथिक तुम अपने पथ को प्राप्त करके पुनः अवहेलीत भाव से उस पथ को त्याग करके गमनागमन पथ में अनन्त काल (अर्ध पुद्गल परिवर्तन काल) तक परिभ्रमण करके दुख, क्लेश, संताप उठाने के पात्र मत बन।

**जय तु अपुनरागमः पथः॥**

Scanned by CamScanner

# सार्वभौम, वैश्विक, सर्वोदय धर्मका स्वरूप

विश्वके प्रत्येक द्रव्य का जो स्व–स्व शुद्ध स्वभाव है वह ही सार्वभौम, वैश्विक, सर्वोदय धर्म है। इस लेखमें जीव सम्बन्धी विचार–विमर्श करेंगे। जीवमें अनंत धर्म होते हैं उसमें से कर्त्तव्य धर्म के बारे में प्रकाश डाल रहे हैं

१. **सत्य :–** जो यथार्थ हो, पवित्र हो, अनन्त शक्तियों का पिण्ड हो, समस्त गुण धर्म अच्छाईयों का आधार हो – स्त्रोत हो, उसे सत्य कहते हैं। जो विश्व में शुद्ध रूपमें विद्यमान हो, उसे परम सत्य जानना चाहिये। जीवकी भावात्मक पवित्रता, आध्यात्मिक सत्य है। पवित्रता से रहित सत्य बोलना, धार्मिक क्रिया–काण्ड करना भी असत्य है



Scanned by CamScanner

अधर्म है। भावकी पवित्रता रहित सत्य बोलना कभी–कभी असत्य से भी अधिक भयंकर हो सकता है जैसाकि शिकारी को शिकार का पता बताना। दुष्ट भाव से सहित चोर, डाकू, वेश्या, दुष्ट, बदमाशों के मीठे वचनों से भी अधिक सत्य पवित्र भाव से युक्त गुरू, सज्जनों के कठोर, कडवेदि वचन है। भलाहकारी, निन्दात्मक कठोर बकवास, अहंकारपूर्ण, फूट डालनेवाला सत्य वचन भी असत्य है। उचित वचनका पालन नहीं करना प्रामाणिकता का अभाव, निर्धारित समय में काम नहीं करना, कूट–कपट करना, चोरी–डकैती, मिलावट, काला बाजारी, ठगी करना एवं स्व योग्य कर्तव्योंका पालन नहीं करना दूसरों की हँसी उड़ाना आदि भी असत्य है।



Scanned by CamScanner

२. **समता/अहिंसा :–** आत्माकी समरसता शान्तिको नष्ट नहीं करना या हत्या/हिंसा नहीं करना आदि को समता/अहिंसा कहते है। प्रत्येक जीवका शुद्ध स्वरूप समता, अहिंसा, सुख शांतिमय होने के कारण प्रत्येक जीव सुख शांति को चाहता है। भले कोई जीव ज्ञान या धर्म नहीं चाहता हो या कोईजीव धन या नाम नहीं चाहता हो तथापि प्रत्येक जीव सुख -शान्ति तो चाहता ही है। जैसाकि नास्तिक मिथ्यादृष्टि धर्म नहीं चाहता ? तथापि सुख शान्ति तो चाहता हैं तथा निःस्पृह साधू संत धन या नाम नहीं चाहते है तथापि सुख–शान्ति चाहते हैं। सर्व यहाँ तक कि वनस्पति कीट, पतंग आदि अविकसित क्षुद्र जीव भी सुख शान्ति चाहते हैं। ऐसी सर्व जीवों के



Scanned by CamScanner

सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्येष्ठ, प्रिय वस्तुको बाधा पहुँचाना, नष्ट करना विकृत करना पाप है, अधर्म है, अपराध है। स्वयं की समरसता शान्ति की हत्या किये बिना दूसरों की सुख शान्ति की हत्या नहीं हो सकती है। अतएव स्वहिंसा/भावहिंसा ही यथार्थ से हिंसा हैं और दूसरों की जो हिंसा होती है उसे द्रव्य हिंसा/गौण हिंसा कहते है। असत्य क्रूरता, घमण्ड, मायाचारी, तृष्णा, घृणा, कठोरता, चोरी आदि से आत्मा की समरसता/शान्तिकी हत्या होती है अतः वह सब हिंसा ही है। अतः शरीर के अवयवों को नष्ट करने रूप द्रव्यहिंसासे भी बड़ी हिंसा क्रूरता, घृणा, तृष्णादि रूपी भाव हिंसा है। कृषि कार्य से आनुशांगिक रूप से अनेक जीव मरने पर भी



Scanned by CamScanner

कृषक से भी ज्यादा हिंसक वह व्यापारी है जोकि मिलावट करता है, शोषण करता है, कृत्रिम रूप से अभाव उत्पन्न करके अधिक मूल्य से माल बेचता है, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तथा हिंसात्मक बीडी, तम्बाकु, पानमसाला, शराब, चर्म निर्मित वस्तु, चर्बी मिश्रित तथा अखाद्यादि मिश्रित वस्तु बेचता है, दूसरों की मजबूरियों का लाभ उठाकर ब्याजादि के माध्यम से शोषण करता है। दूसरों की प्रगति, प्रशंसा, अच्छाइयों से डाह करना, उसमें बाधा डालना, सार्वजनिक सम्पत्ति आदि का दुरूपयोग करके, अस्वच्छ करके दूसरों को बाधा पहुंचाना भी हिंसा है। राष्ट्र की रक्षार्थे, दूसरों की रक्षार्थे आत्मा की रक्षार्थे या न्याय-धर्म की रक्षार्थे जो विपुल



Scanned by CamScanner

मनुष्यों की भी हत्या हो जाती है उससे भी गोर्हित हिंसा वह है जो हत्या धन, भोजन, मंत्र, सिद्धि, देवी–देवता की प्रसन्नता के लिये या धर्म के नाम पर एक भी पशु–पक्षी या मनुष्य की की जाती है। स्वयं हिंसा करना, हिंसा करने के लिए प्रेरित करना, हिंसा के लिए सहमत होना, हिंसाकी योजना बनाना, हिंसा में योगदान देना आंदि भी हिंसा है। कदाचित् हिंसा करनेवालों से भी वह अधिक हिंसक है जो हिंसाकी योजनादि बनाता है। क्रूक, कुटिल, असहिष्णुभाव रखता है, घृणारूपी अग्नि से जलता रहता है। जैसा कि विष पीकर मरनेवाला तो स्वयं उस विषसे अधिक सेअधिक एक बार ही मरेगा परन्तु विष पिलानेवाला, उसे बेचनेवाला विपुल



Scanned by CamScanner

जीवोंको मार डालेगा। इसी प्रकार शराब, बीडी, तम्बाकु, मांसादि सेवन करनेवालों से भी उसका व्यापार करनेवाला, झूठ बोलनेवालों से भी झूठ से व्यवसाय (झूठे वकील, जज, व्यापारी, भ्रष्टाचारी, नेतादि) करनेवाले, चोर--डाकू, ठगो से भी इस कार्य से प्राप्त धन का व्यापार करनेवाले उन्हें, नियोजित करनेवाले, उन्हें संरक्षण देने वाले, वेश्यागमन करनेवालों से भी वेश्याओं का व्यापार करनेवाले अधिक हिंसक / पापी / अधर्मी है। इसलिए केवल शरीर से द्रव्य हिंसा आदि पाप नहीं करनेवालों को धार्मिक नहीं मान लेना चाहिये। जैसाकि कुछ युद्धमें राजा, सेनापति आदि युद्ध नहीं करते हैं परन्तु मुख्य कारण/सूत्रधार वे ही होते हैं। इसलिए साक्षात्



Scanned by CamScanner

द्रव्य युद्ध नहीं करने पर भी वे भाव युद्ध करते हैं। इसलिए वे हिंसा के पूर्ण भागी होते हैं। इसी प्रकार वर्तमानकाल में अनेक भ्रष्टाचार, घोटाला, हत्या, बलात्कार के प्रच्छन्न मुख्य कर्णधार/ सूत्रधार नेता, मंत्री, नौकरशाही, पुलिस उद्योगपति, व्यापारी आदि होने से वे भी इन पापों के पूर्ण उत्तरदायी है।

३. **सापेक्ष विचार / सहिष्णुता (उदारता)** :— विश्व के प्रत्येक द्रव्य /घटक/ घटनाओं के अनेक गुण धर्म, पक्ष/ कारण होनेके कारण उन्हें उन—उन दृष्टियोंसे देखना चाहिए/ समझना चाहिए /कथन करना चाहिए। इसे ही अनेकान्त सिद्धान्त, वैचारिक अहिंसा, उदारता, सहिष्णुता, सापेक्ष सिद्धान्त, स्याद्वाद आदि कहते हैं। इसके कारण



Scanned by CamScanner

बौद्धिक-विकास, भावात्मक-विशालता, आत्मा की पवित्रता, कथनमें लचीलापन / मृदुता आती है तथा संकीर्णता, कटुता, झगड़ा, कलह, द्वेष, फूट, युद्ध, विग्रह, हिंसा, आदि घटती है। यह गुण उस व्यक्तिमें प्रगट होता है जो अंधविश्वास, संकीर्णता, घमण्ड, पूर्वाग्राही, दुराग्राही, मायाचारी आदि दुर्गुणोंसे रहित होता है।

भूतका विश्व-इतिहास और वर्तमान का प्रायोगिक ज्ञान यह सिद्ध करता है कि व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो कुछ वाद-विवाद, विसंवाद, कलह, झगडा, युद्ध होते हैं उसमें मुख्य कारण संकीर्णता / असहिष्णुता अनुदारता है। अतःएव व्यक्तिसे लेकर विश्वशान्ति तक के लिए



Scanned by CamScanner

सापेक्ष विचार, सहिष्णुताकी आश्यकता है। धार्मिक इतिहास, पुराण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि धर्ममें भी जो मत, मतान्तर, कूट, कलह, युद्ध होते हैं वे भी असहिष्णुताके कारण हैं। धर्म के प्रचारक यथाः तीर्थंकर, पैगम्बर, ईसा–मसीह, साधु–संत जो उपदेश करते हैं आगे जाकर उनके अनुयायी उनके ही सिद्धान्तको लेकर या उनको ही लेकर झगडा, कलह, कूट, आदि करते हैं। आज जैनधर्म, हिंदूधर्म, ईसाईधर्म, मुस्लिमधर्म में अपने–२ एक ही ग्रंथ एवं एक ही धर्म प्रचारक को लेकर कूट से लेकर युद्ध तक करते रहते हैं।इसी प्रकार राजनीतिमें, समाजमें, परिवारमें, ग्राममें, नगरमें, प्रांतमें, राष्ट्रमें, अंतर्राष्ट्रमें इस असहिष्णुताके कारण विशमता फलती–फूलती है।



Scanned by CamScanner

प्रकारान्तर से सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, सत्-विश्वास, सद्विज्ञान, सदाचार, क्षमा, मृदुता, सरलता, निर्लोभता, पवित्रता, संयम, तप, त्याग, शालीनता, विनम्रता, परोपकारिता, दानशीलता सहिष्णुता, उदारता आदि ही सार्वभौम, वैश्विक, सर्वोदय धर्म हैं। इस धर्म के सहायक हैं स्वावलम्बन, सहकार, समयानुबद्धता, प्रमाणिकता, साहस, स्वच्छता, स्वास्थ्य, योग्य परिस्थिति, कर्तव्यनिष्ठा, कर्मशीलता योग्य साधनादि।

विश्वमें जो विभिन्न नामधारी धर्म/पंथ/सम्प्रदाय मजहब है या धार्मिक रीति रिवाज, पूजा पाठ, तीर्थ यात्रा, पर्व, महोत्सव, धार्मिक स्थल, मूर्ति, धार्मिक ग्रन्थ, वेषभूषा, भाषा, पुराण, इतिहास, किम्बदन्ती,



Scanned by CamScanner

परम्परा, मंत्र, दीक्षा, शिक्षा, देवी–देवता आदि हैं वे सब धर्म के लिए अधिक से अधिक साधक / निमित्त हो सकते हैं। इसे ही धर्म मान लेना महान भूल होगी। जैसेकि 'आम' शब्द को ही यथार्थ से आम मानना, अहिंसा शब्द को ही यथार्थ से अहिंसा मान लेना, भारत के नक्सा को ही यथार्थ से भारत मान लेना।

सत्य में लोकालोक (विश्व एवं प्रति विश्व) स्थित समस्त द्रव्य / सात तत्व एवं ९ पदार्थ गर्भित है तो समता में समस्त मुनि तथा श्रावक धर्म के अन्तर्गत है तथा सापेक्ष सिद्धान्तमें समस्त वैचारिक और कथन प्रणाली गर्भित है। अतएव सत्य, समता एवं सापेक्ष ही सार्वभौम, वैश्विक, सर्वोदय, धर्म है। अतः सत्य ही परमेश्वर, समता ही सदाचार और सापेक्ष ही समन्वय / शुभाशयहै।



Scanned by CamScanner

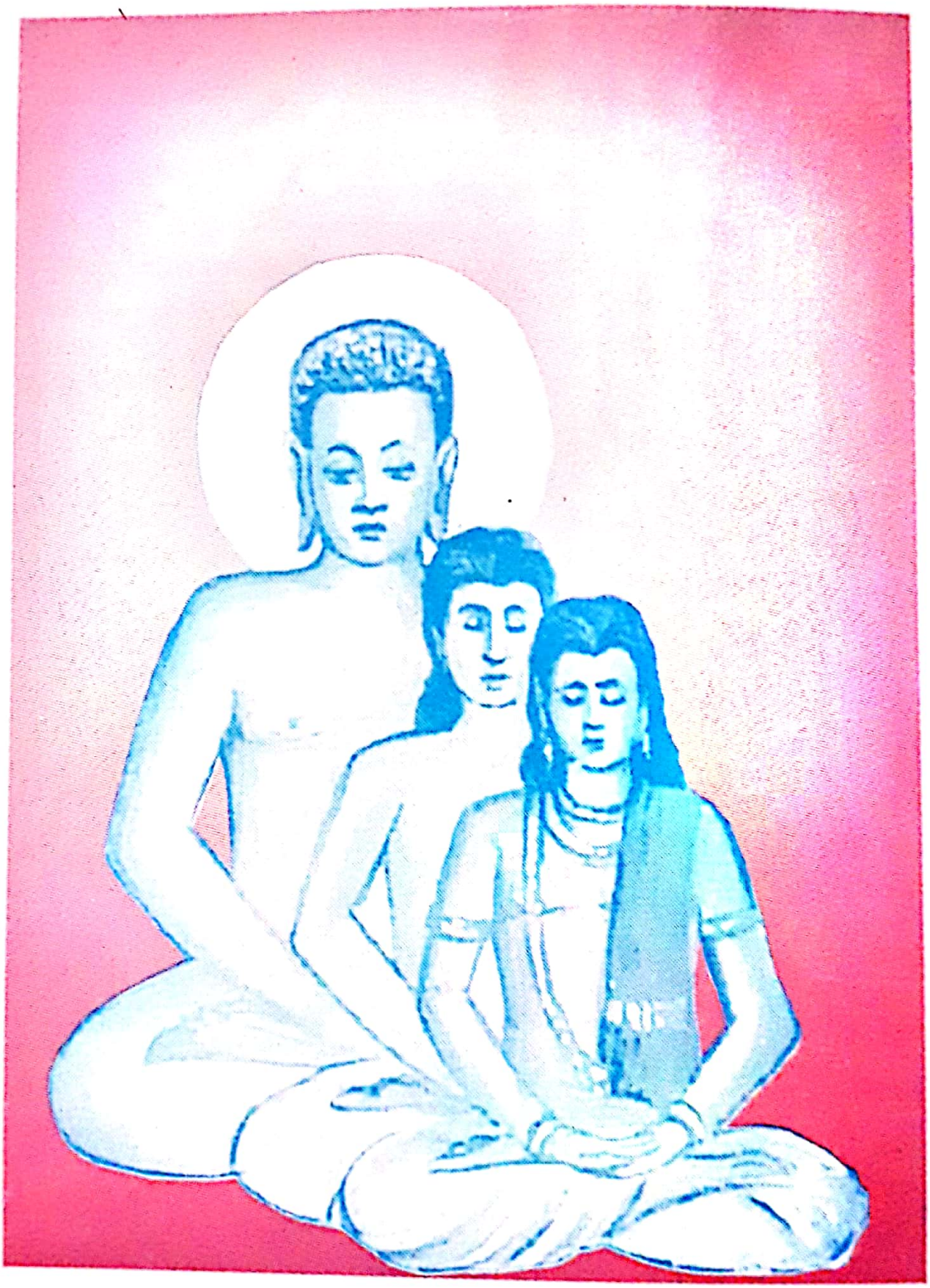

Scanned by CamScanner